<u>हमारा देश</u>

पात्र : (1) दीनानाथ (2) हीरा (3) इंदु (4) शारदा (5) आदमी क (6) आदमी ख (7) आदमी ग (8) हवालदार (9) आँचल (10) काजल (11) रमेश ।

(अंक - 1)

दीनानाथ : अरे बेटा ! तुम मुझे क्यों अपने से अलग कर रहे हो ? आखिर मैं तुम्हारा पिता हूँ ।

हीरा : ज़्यादा बोलने की जरुरत नहीं है । वैसे ही आपका बोझ बहुत बढ़ गया है । हुं. . . . कर्ज़ आपने लिया और लोग हमसे माँगने आते हैं, ऐसा नहीं होगा ।

दीनानाथ : पर बेटा, वह कर्ज़ तो मैंने तुम्हे पढ़ाने के लिए लिया था । अपना पेट काटकर तुम्हें पढ़ाया - लिखाया; एक अच्छा वकील बनाया ताकि तुम सारा कर्ज़ उतार सको ।

इंदु : हाँ, हाँ, ... सारा कर्ज़ तो यही उतारेंगे ना । कर्ज़ आपने किस कारण लिया वह किसे पता, चुपचाप से निकल जाइए, मैं कह देती हूँ ।

दीनानाथ : पर बेटा सुनो तो . . . . **[रोते हुए]**

हीरा : **[बीच में बात काटते हुए]** कोई बेटा - वेटा नहीं । हाथ जोड़ता हूँ, जाइए यहाँ से ।

[दीनानाथ रोते - रोते वहाँ से निकलता है; पर वह कहाँ जाएगा उसे स्वयं पता नहीं है । नेपथ्य से गाना बजता है, "तुझसे नाराज़ नहीं ज़िंदगी. . . . आँखें तरस जाएंगी" ।]

(अंक - 2)

शारदा : **(रोते हुए)** अरे भाई कोई तो मेरी मदद करो । हम तो बेसहारा हो जाएंगे, कम से कम हमारा घर तो मत छिनो । कोई तो कुछ कहो, वे लोग हमारा सामान घर से बाहर फेंक रहे हैं । कोई तो उन्हें मना करो । **[सभी के सामने हाथ जोड़ती है और प्रार्थना करती है पर कोई कुछ नहीं कहता । दीनानाथ वहीं से गुजर रहा होता है । ये सब सुनकर वह कुछ देर के लिए वहीं रुक जाता है ।]**

दीनानाथ : वे तुम्हें घर से क्यों निकाल रहे हैं बहन ।

शारदा : क्या बताऊँ, भइया, किसी ने हमसे अधिक किराया देने का वायदा किया है मकान मालिक को इसलिए वे उन्हें रखना चाहते हैं, हमें नहीं । हमारी हैसियत इतनी नहीं है कि हम उन्हें इतना किराया दे सकें । इसीलिए वे हमें जबरदस्ती घर से निकाल रहे हैं ।

दीनानाथ : परंतु बहन ये तो सरासर नाइंसाफी है । तब तो तुम्हें कानून का दरवाजा खटखटाना चाहिए ।

ये लो हवलदार साहब तो यहीं हैं, उन्हीं से बोलो ।

हवलदार : हमसे क्या बोलना और सुनना है, घर के मालिक वे लोग हैं, उन लोगों की मर्ज़ी कि तुम्हें निकाले या रखे ।

दीनानाथ : हवालदार साहब ऐसा मत कहिए, यह बेचारी कहाँ जाएगी ?

हवालदार : ठीक है, अगर कुछ करना ही चाहते हो तो **[एकांत में ले जाकर उनसे कहता है]** मेरे पॉकेट का बस खयाल रखोगे तो बोलो कुछ करता हूँ ।

शारदा : मैं गरीब बुढ़िया कहाँ से इतने पैसे लाऊँगी, कुछ तो रहम करो ।

हवलदार : क्या ! पैसे नहीं हैं, तब तो मैं गूंगा और बहरा हूँ । **[जाते - जाते]** और अंधा भी, क्योंकि कानून तो अंधा भी होता है ना ।

शारदा : अरे कोई तो मदद करो । **[रोती है, दीनानाथ वहाँ से आगे बढ़ जाता है]**

[गाना बजता है - "कल चमन था, आज आशियाँ........" (फिल्म - खानदान)

(अंक - 3)

[नल पर कुछ लोग पानी भरते हैं, इतने में झगड़े की आवाज़ आती है । दीनानाथ वहीं से गुजर रहा होता है, झगड़े की आवाज़ सुनकर वह रुक जाता है ।]

आँचल : पहले मेरा बरतन लगा है, इसलिए पहली पारी मेरी है ।

काजल : आ.. हा.. हा.. बोल तो ऐसे रही है जैसे कि कोई महरानी है । चल, चुप से बरतन हटा, जानती नहीं, जहाँ भी मैं खड़ी हो जाती हूँ, लाइन वहीं से शुरु हो जाती है ।

आँचल : ऊँह.... बड़ी आई लाइन शुरु करवाने वाली, हमारे मुहल्ले में कल से बिजली नहीं है और ये महारानी लाइन वाली बनी है । चल हट, हवा आने दे ।

काजल : तू मेरी बात मानती है या . . . . . .

आँचल : या. . या. . क्या, क्या कर लेगी ?

काजल : तू जानती नहीं, मेरी पहुँच बहुत ऊपर तक है ।

आँचल : **[हँसते हुए]** कितना ऊपर तक, मेरी पहुँच तो भगवान तक है, ऊँह . . . .

[इतने में दोनों में हाथा - पाई होनी शुरु हो जाती है, दीनानाथ छुड़ाता है पर कोई छोड़ने को तैयार नहीं होता । दूसरे लोग भी दीनानाथ पर चिल्लाते हैं, पर कोई बीच-बचाव नहीं करता । नेपथ्य से बरतन की आवाज़ आती है । अचानक आ.... की आवाज़ आती है । एंबुलेंस की आवज़ आती है, दीनानाथ आगे बढ़ जाता है ।]

[नफरत की लाठी तोड़ो .... फिल्म (देशप्रेम)]

(अंक - 4)

रमेश : अरे दीना चाचा, बड़ी परेशान लग रहे हैं, ऐसे . . . . कहाँ जा रहे हैं चाचा ?

दीनानाथ : कुछ नहीं बेटे, बस ऐसे ही ....

रमेश : चाचा, क्यों छुपा रहे हैं, आखिर हीरा ने आपको निकाल ही दिया ना आप ही के घर से ?

दीनानाथ : **(रोते हुए)** हाँ बेटा, अब मैं क्या करूँ ?

रमेश : चाचा, बुराई कितनी भी अधिक हो, पर अच्छाई के आगे छोटी ही रहेगी । बुराई एक अंधेरे की तरह है चाचा, और अच्छाई उस चिंगारी की तरह है जो सौ साल के अंधेरे को एक पल में दूर कर देती है ।

दीनानाथ : पर बेटा, यह अच्छाई रूपी चिंगारी कहाँ बची है ?

रमेश : चाचा आप तो जानते हैं कि मेरे पिता को मैंने देखा ही नहीं है । आज से आप ही मेरे पिता है । पिता तो घर के छत के समान है जो घर में रहने वालों की रक्षा करता है । पिता का दर्जा तो भगवान समान होता है चाचा ।

[दोनों गले लगते हैं । नेपथ्य से गाना बजता है ।ये तो सच है कि भगवान है । फिल्म- हम साथ साथ हैं ।]

दीनानाथ : बेटा, आज मैंने एक औरत को घर से बेघर होते हुए देखा; किसी को पानी के लिए झगड़ते हुए देखा । बेटा, इस देश का अब क्या होगा ?

रमेश : हाँ चाचा, अब समय बदल गया है इन मन - मुटावों का कारण अपर्याप्त संसाधन और हद से ज्यादा जरुरतों का होना है लेकिन हमारे दिल में अभी भी उम्मीद है कि एक न एक दिन हर तरफ शांति ही शांति, प्यार ही प्यार होगा । हमारा भारत महान था, महान है और महान ही रहेगा ।

[दोनों आगे बढ़ने लगते हैं । नेपथ्य से गाना बजता है.... होगी शांति चारों ओर.... होगी शांति चारों ओर]

लिखित - लोकेश चंद्र लाल

सहायक शिक्षक

ग्रीन प्वाइंट एकेडमी

कुल्तोड़ा, कुल्टी